शोध मंथन Vol. XIII No.II Apr.-June 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

भारतीय अणु रक्षा नीति एवं द्वितीय पोखरण विस्फोट एक अध्ययन

प्राप्तिः 16.05.2022
स्वीकृतः 04.06.2022

40

प्रशांत कुमार
राजनीति विज्ञान विभाग
फ़िरोज़ाबाद

डॉ० लता शर्मा
राजनीति विज्ञान विभाग
दिल्ली यूनिवर्सिटी
ग्रेटर नोएड़ा
ईमेलः *urviangrish@gmail.com*

सारांश

आधुनिक प्रवृत्ति अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार को शक्ति के आधार पर समझने की है। आर्गेन्सिकी के अनुसार अपने हितों के अनुकूल दूसरे राष्ट्रों के व्यवहार को प्रभावित करने की योग्यता का नाम शक्ति है। जब तक कोई राष्ट्र यह नहीं करता चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों ना हो, उसे शक्तिशाली नहीं कहा जा सकता। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के विद्वानों ने राष्ट्रीय शक्ति को राष्ट्र का एक सबसे बड़ा केंद्र बिंदु माना है जिसके चारों और उसकी विदेश नीति के विभिन्न पहलू चक्कर काटते रहते हैं।

मुख्य बिंदु

भौगोलिक स्थिति, सैनिक शक्ति, चहूँमुखी, दैत्य कूटनीतिक, प्रक्षेपास्त्र, P.T.B.T.,N.T.B.T., एन.पी.टी., बुद्ध मुस्कुरा रहे हैं, फ़िशन डिवाइस, लो यील्ड डिवाइस, थर्मोन्यूक्लियर डिवाइस।

कोई भी देश अपनी विदेशी नीति अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर बनाता है। विदेश नीति निर्धारण में जिन बातों को ध्यान में रखा जाता है उसमें जनसंख्या, भौगोलिक स्थिति, सैनिक शक्ति, भाषा, धर्म नस्ल और संस्कृति, विचारधारा, नीति निर्माता विश्व जनमत, विश्व संगठन आदि विदेश नीति निर्धारण के आधारभूत निर्देशक तत्वों की भूमिका अदा करते हैं। समय, काल और परिस्थितियों के बदलते परिप्रेक्ष्य में इन तत्वों में एक दूसरे की महत्ता घटती बढ़ती रहती है। विदेश नीति गतिशील है और उसके लक्ष्य भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति के बदलते परिप्रेक्ष्य में विदेश नीति के लक्ष्य भी इस मौजूदा वातावरण में अपने को ढालने का प्रयास करते हैं। विदेश नीति के लक्ष्यों में राष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा चहूँमुखी आंतरिक विकास आंतरिक उद्देश्य वैचारिक उद्देश्य सैनिक दृष्टि से शक्तिशाली बनाना विश्व शांति और सुरक्षा की स्थापना आदि आते हैं। कोई भी देश अपनी विदेश नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनेक उपकरणों का सहारा लेता हैं। जिसमें सन्धिवार्ता सन्धि क्षेत्रीय सुरक्षा सन्धि युद्ध आर्थिक सहयोग संगठन की स्थापना, युद्ध दैत्य कूटनीतिक संबंधों की स्थापना इत्यादि का समावेश किया जाता है।

शक्ति और शक्ति को लागू करने की धमकी अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध में प्रमुख भूमिका निभाते रहे हैं और प्रायः सैनिक शस्त्रों की तकनीकी विकास में सभी देशों को राष्ट्रीय व्यवस्था को प्रभावित किया है। वर्तमान समय में परमाणु अस्त्रों के द्वारा राज्य राष्ट्रीय की अवधारणाओं को नई चुनौतियां दी गई है हालांकि यह कहना उचित नहीं है कि परंपरागत सैनिक शस्त्र आज पुराने हो चुके हैं परंतु आणविक शस्त्रों का प्रसार आज राष्ट्रीय सैनिक शक्ति को नए रूप में परिभाषित करता है।

आणविक शस्त्रों की एक प्रमुख विशेषता उनका विध्वंसकारी स्वरूप है वर्तमान समय में संपूर्ण मानव जाति को केवल एक आणविक अस्त्र के विस्फोट मात्र से समाप्त किया जा सकता है जिसके कारण आज इन शस्त्रों के वास्तविक प्रयोग को तार्किक रूप से कोई भी स्वीकार नहीं कर पाता है।

आणविक युद्ध केवल राजनेताओं अथवा इतिहास को सनक के कारण ही नहीं बल्कि मानवीय अथवा यांत्रिक भूल के कारण भी हो सकता है 1961 मैं जब चंद्रमा से लोटी किसी तरंग को अतेरिकी रडारो ने पकड़ा तो उस तरंग का अर्थ यह समझा गया कि आणविक आक्रमण के लिए सोवियत रूस के विमान अमेरिका की ओर चल पड़े हैं। तत्काल अमेरिका के बम वर्ष को भी सोवियत संघ पर आणविक आक्रमण का आदेश दे दिया उन दिनों प्रक्षेपास्त्र नहीं बन पाए थे इसलिए विमानों को वापस बुला लिया गया। आज के प्रक्षेपास्त्र के युग में तो इस 1 घंटे की अवधि में आणविक युद्ध अपनी पूरी गति से आरंभ हो सकता है।

भारतीय परमाणु नीति

भारत सरकार के उन बहुत कम देशों में है जिन्हें परमाणु क्षमता संपन्न कहा जा सकता है दुनिया में जिस समय परमाणु शक्ति के क्षेत्र में क्रांतिकारी आविष्कार हो रहे थे लगभग उसी समय प्रतिभाशाली वैज्ञानिक होमी जहांगीर भाभा ने जे. एल. नेहरू को पत्र लिखकर स्वतंत्र भारत में परमाणु विकास के लिए प्रेरित किया था। 1943 में एनीरीको कर्मो लिओ स्लीजर्ड, ओपेन हाइमर आदि भौतिक शास्त्रीय अणु बम के निर्माण के लिए मेनहट परियोजना में लगे थे। लोस एमोस परीक्षण के बाद यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो चुकी थी कि ऊर्जा का एक अभूतपूर्व स्रोत मानव जाति के हाथों लग गया है जिस समय आइंस्टीन अमरीकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट को यह सुझा रहे थे कि परमाणु शक्ति का उपयोग जापान और जर्मनी जैसे विकट शत्रु को ध्वस्त व परास्त करने के लिए किया जा सकता है उसी समय होमी भाभा अणु विभाजन की शांतिपूर्ण दोहन की दूरदर्शिता प्रदर्शित कर रहे थे। नेहरू जी इस समय तक प्रधानमंत्री नहीं बने थे और न ही वह इस काम के लिए सरकारी संसाधन सुलभ करा सकते हैं। वस्तुत भारतीय परमाणु विकास कार्यक्रम की यह विशेषता रही है कि इसको आरंभ से ही सरकार वैज्ञानिकों और राष्ट्र प्रेमी पूंजीपतियों का सहयोग मिलता रहा है। भाभा हामी परसी परिवार के वंशज थे और टाटा वंश के समाजसेवी जन कल्याणकारी संस्कारों से युक्त थे। भारत के आजाद होने से पहले ही नेहरू और भाभा के सदप्रयत्नों से टाटा प्रतिष्ठान द्वारा जुटाए गए संसाधनों के माध्यम से भारत में परमाणु शोध में भारत अगली पंक्ति में रहा। इसके लक्षण शांति को पुष्ट करने वाले रहे और भारत के शीर्षस्थ नेता इसमें अभिन्न रूप से जुड़े रहे।

भारत का परमाणु कार्यक्रम

1. नेहरू के काल में परमाणु नीति :–

परमाणु शक्ति के शांतिपूर्ण प्रयोग से नेहरू जी को कोई परहेज था। उन्होंने बिजली ऊर्जा के उत्पादन चिकित्सा तथा कृषि विकास के लिए भाभा को निरंतर प्रोत्साहित किया उन्होंने अपने वैज्ञानिक विवेक के अनुसार उन्हें परियोजनाओं के नियोजन संचालन की पूरी छूट दी। भाभा को इस बात का श्रेय दिया जाना चाहिए कि उन्हें अपने व्यक्तिगत संबंधों का लाभ उठाते हुए मुंबई के निकट तारापुर में कनाडा की सहायता से अप्सरा नामक परमाणु भट्टी संयंत्रों का निर्माण सफलतापूर्वक किया। वह इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि भारत के पास इन परमाणु संयंत्र को चलाने के लिए जरूरी ईंधन यूरेनियम का यथेष्ट भंडार नहीं है इसलिए इन्होंने भारत में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थोरियम के उपयोग का प्रस्ताव रखा।

नेहरू के प्रयत्नों से आंशिक परमाणु परीक्षण रोग संधि (Partial Test Ban Treaty) तथा परमाणु परीक्षण रोग संधि (Nuclear Test Ban Treaty) पर हस्ताक्षर हो सके। 1961 में बेलग्रेड में आयोजित गुट निरपेक्ष देशों के शिखर सम्मेलन में नेहरू जी और सुकार्णो की मुठभेड़ पर एक प्रमुख मुद्दा नेहरू जी द्वारा नव–उपनिवेशवाद के मुकाबले परमाणु शस्त्रीकरण के संकट को मानव जाति के लिए अधिक खतरनाक बतलाना था। नेहरू जी के जीवन काल में भले ही भारत चीन संबंधों में तनाव बढ़ने लगे थे परंतु चीन अणुशक्ति संपन्न नहीं था। पाकिस्तान के बारे में तो यह बात दूर तक भी सोची नहीं जा सकती। नेहरू कालीन भारत बड़े पैमाने पर आंतरिक विकास के लिए विदेशी सहायता पर निर्भर था। अतः परमाणु शक्ति का सैनिक शस्त्र के रूप में प्रयोग की संभावना पर अधिक बल नहीं दिया गया।

2. शास्त्री कालीन परमाणु नीतिः–

महत्वपूर्ण परिवर्तन शास्त्री जी नेहरू जी की तरह बौद्धिक दार्शनिक रुझान वाले व्यक्ति नहीं थे और न ही उनका विश्व दर्शन सामान्य निशस्त्रीकरण के लिए प्रतिबद्ध था। भारत की परमाणु नीति के संदर्भ में तत्कालीन राजनीतिक सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों को देखने हुए यह कमजोरी नहीं बल्कि ताकत थी।

इसी तरह शास्त्री जी अपने प्रशासनिक अंतराल में ही नेहरू जी की स्थापनाओ पर आधारित देश की परमाणु नीति में मुख्य परिवर्तन करने में सफल हुए। जहां एक ओर 1965 में पाक के साथ मुठभेड़ में यह बात सामने ला दी थी कि राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद निरापद नहीं समझी जा सकती। वहीं दूसरी ओर 1964 में चीन के द्वारा अणु शस्त्र हासिल करने के बाद उत्तरी सीमा का संकट भी 1962 की तुलना में कई गुना गहरा हो गया। भारत की प्रतीरक्षा के बारे में शास्त्री जी नेहरु जी की तुलना में कहीं अधिक यथार्थवादी तरीके से सोचते थे। उन्हें भारत की स्वाधीनता के साथ किसी प्रकार का समझौता स्वीकार नहीं था।

3. इंदिरा गांधी के काल में परमाणु नीति (1965 से 1977 तक):–

श्रीमती इंदिरा गांधी की एक विशेषता यह थी कि वह अपनी नीतियों में शास्त्री जी से भिन्न दिखना चाहती थी। वह अपनी आंतरिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए अपने को नेहरू जी के वास्तविक उत्तराधिकारी के रूप में पेश करना चाहती थी। इसके लिए भारत द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मंच पर

निशस्त्रीकरण का झंडा उठाना उपयोगी हो सकता था परंतु सिर्फ इसी कारण इंदिरा गांधी ने भारत द्वारा परमाणु बम बनाने का निर्णय स्थगित नहीं किया उन्होंने इस बात के अथक प्रयास किए कि भारत को नुकसान पहुंचाने वाली कोई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था उस पर थोपी ना जा सके एन.पी.टी. (Nan Proliferation treaty) पर हस्ताक्षर नहीं करने की भारतीय इस बात का प्रमाण है ऐसा नहीं था कि भारत अपने और दूसरों के संदर्भ में दो अलग–अलग मानदंडों का प्रयोग करता था या उसने इस मामले में अपने सिद्धांतों के साथ समझौता करना स्वीकार कर लिया वस्तुतः यह प्रश्न देश की संप्रभुता और स्वाधीनता को शम प्रतिशत बनाए रखने के लिए निर्धारण निर्धारित नीति से जुड़ा हुआ है। भारत इस निष्कर्ष तक पहुंचने वाला अकेला देश नहीं।

पोखरण विस्फोट प्रथम (1974)

24 मई 1974 को भारतीय परमाणु के विश्लेषकों को एक नाटकीय धमाका सुनने को मिला। राजस्थान में पोखरन नामक रेगिस्तान इलाके सांकेतिक भाषा में एक टेलेक्स संदेश दिल्ली भेजा गया Buddha is Smiling (बुद्ध मुस्कुरा रहे हैं) शांति के अग्रदूत बुद्ध कि यह मुस्कान रहस्य में होने के साथ–साथ व्यंग्य पूर्ण भी थी। इसके द्वारा सूचना भेजी गयी कि भारत ने परमाणु विस्फोट कर लिया। इस शब्द को लेकर आज तक बाल की खाल निकाली जा रही है अंग्रेजी भाषा में इसका नामकरण था शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट। जब आलोचकों ने यह कहना शुरू किया कि परमाणु विस्फोट शांति पूर्ण कैसे हो सकता है तो भारतीय वैज्ञानिकों ने यह कहना शुरू किया कि पोखरन में विस्फोट नहीं अंतः स्फोट किया गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में रेखांकित किया कि भारत विकास परियोजना को संपन्न करने के लिए इस तरह की तकनीक सामर्थ्य प्राप्त करना एक अनिवार्यता थी वह बड़े पैमाने पर पहाड़ तोड़ने, जमीन खोदने, और भूगर्भ शास्त्रीय गवेशणाओं के लिए चुनाव के लिए शांति परमाणु विस्फोट की विशेष उपयोगिता बतलायी गयी। इस संदर्भ में यह बात आसानी से अनदेखी की जाती है कि सोवियत संघ के बाहर किसी अन्य परमाणु संपन्न देश में परमाणु ऊर्जा का एक परमाणु ऊर्जा का ऐसा उपयोग नहीं किया गया।

4. जनता सरकार के काल में परमाणु नीति (1977 से 1980 तक):–

जनता सरकार की काल (1977 से 1980) तक में भारत की परमाणु नीति के संदर्भ में नीति निर्देश तो नहीं लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारी जी मोरारजी देसाई ने एकपक्षीय घोषणा की कि भारत कभी भी किसी भी हालत में परमाणु अस्त्र नहीं बनायेगा। जनवरी 1980 में श्रीमती गांधी द्वारा पुनः सत्ता ग्रहण करने के बाद ही परमाणु नीति निर्धारण का काम पुनः आरंभ हो सका।

पोखरण द्वितीयः

भारत ने अपने पहले परमाणु परीक्षण के 24 वर्ष बाद राजस्थान के ही पोखरन क्षेत्र में सफलतापूर्वक तीन भूमिगत परमाणु परीक्षण किये। इनमें एक परीक्षण हाइड्रोजन बम तकनीकी का भी है यह परीक्षण अपराहन 3:45 पर किये गए। 100 मीटर की गहराई में किए गए इन परीक्षणों की रिएक्टर पैमाने पर तीव्रता 4.7 से 5 के बीच आंकी गई जो कि हल्के भूकंप के समान है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 24 साल पहले भी जब परमाणु परीक्षण किए गये थे उस दिन भी बुद्ध पूर्णिमा थी और आज भी बुद्ध पूर्णिमा है। वह परीक्षण भी पूरी तरह सफल था और यह भी पूरी तरह सफल है यह तीनों परीक्षण अलग–अलग परीक्षण है जिनमें फ़िशन डिवाइस, लो यील्ड डिवाइस और थर्मोन्यूक्लियर डिवाइस शामिल है।

परमाणु विस्फोटकों का संक्षिप्त विवरण :–

क्र०सं०	परीक्षण के प्रकार	समय व तिथि	ऊर्जा उत्सर्जन
1.	थर्मोन्यूक्लियर डिवाइस	15.45, 11.5.98	45 किलो टन
2.	फ़िशन डिवाइस	15.45, 11.5.98	15 किलो टन
3.	लो यील्ड वाले डिवाइस	15.45, 11.5.98	0.2 किलो टन
4.	लो यील्ड डिवाइस	12.21, 11.5.98	0.5 किलो टन
5.	लो यील्ड डिवाइस	12.21, 13.5.98	0.3 किलो टन

आंतरिक एवं बाह्य प्रतिक्रियाएं :–

आंतरिक दबाव भारत द्वारा किए गए परमाणु परीक्षणों पर देश के भीतर जो आपत्तियां पैदा हुई उन्हें गहराई से समझने की जरूरत है। क्योंकि यह लोग अपने ही हैं और इनके मनोविज्ञान को जितने बेहतर ढंग से समझा जाएगा। हम अपनी राजनीतिक समझ और अपना कार्यक्रम उतना ही बेहतर बना सकेंगे। मोटे तौर पर तीन तरह की आपत्तियां सामने आयी हैं।

पहली आपत्ति :– वामपंथियों की रही वे कुछ समय तक तो चुप रहे, शायद वे देखना चाहते थे कि दूसरे लोगों की क्या प्रतिक्रिया है। हमेशा से ही वामपंथियों को निर्णय लेने में समय लगता है। कहने की जरूरत नहीं कि इस कारण भी वामपंथी को जनता के बीच जड़ें जमाने में कठिनाई आती थी यही कारण है कि ज्यादातर ज्यादातर वामपंथियों ने परमाणु परीक्षण का विरोध करते हुए शायद यह याद दिलाया कि चीन ने हमें कोई खतरा नहीं। अतः हमें परमाणु बम बनाने की कोई जरूरत नहीं थी।

द्वितीय आपत्ती :– कुछ नक्सलवादी समूहों ने परमाणु परीक्षणों पर जिस तरह की आपत्ति की थी वे अत्यंत मनोरंजक हैं उन्हें इस बात की खुशी है कि भारत ने परमाणु परीक्षण कर अमेरिका के एक छत्रवादी इरादों पर गंभीर चुनौती दी थी अब तक भारत की सरकार जिस तरह से अमेरिका के आगे झुकी रही वह न केवल अशोभन है बल्कि हमारी राष्ट्रीय अस्मिता के खिलाफ। नक्सलवादियों की नजर में अमेरिका साम्राज्यवादी इस दुनिया में सबसे बड़ा खतरा है।

तृतीय आपत्ति :– जिसका संबंध शान्तिवादियों से है। ये वैसे लोग हैं ,जिन्हें हिंसा की कोई भी तैयारी पापपूर्ण लगती है इन्हें पर्यावरणवादी भी कहा जा सकता है क्योंकि यह मौजूद औद्योगिक सभ्यता का विरोध करते हैं और एक ऐसे आर्थिक विकास की वकालत करते हैं जो प्रकृति के साथ सामंजस्य बना कर चले कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति इनका विरोध नहीं कर सकता बेहतर हो कि भारत इसी रास्ते पर चले लेकिन अपने इन मित्रों को याद दिलाने की जरूरत थी कि राष्ट्रीय सुरक्षा कोई ऐसी चीज नहीं जिस पर किसी प्रकार का समझौता किया जा सके यदि पूरी दुनिया शांतिवादियों या पर्यावरणवादी हो जाती है तो न केवल सारे परमाणु बमों को नष्ट करना होगा या चांद अथवा किसी ग्रह पर भेजना होगा बल्कि अधिकांश परंपरागत हथियारों को भी विदा करना होगा। लेकिन जब तक ऐसी समाज बनाने में हम सफल होते हैं तब तक तो हमें अपनी सुरक्षा की पूरी तैयारी करनी होगी।

बाहय प्रतिक्रियाएं विश्व की बेचैनी को तथा आश्चर्य को प्रकट कर रही थी। अमेरिका ने अपनी सहायता पर यह खबर मिलते ही प्रतिबंध लगा दिया तथा ये कहा कि भारत ने यह परीक्षण सी. टी. बी. टी. तथा विश्व के अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध किया है जो उसकी दृष्टि में भी उचित नहीं है। जापान ने अपनी सहायता जो वर्ष 1999 में पोलियो की दवा के रूप में प्राप्त होनी थी प्रतिबंध लगा दिया। कनाडा, फ्रांस, न्यूजीलैंड, हालैंड, जर्मनी, इटली आदि का विरोधी महाशक्ति शक्तियों के जैसा ही रहा। रूस ने अपनी भारत के साथ वर्षों की मैत्री के आधार पर अपना सकारात्मक रुख अपनाया था तथा कहा की अगर भारत जैसे देश में अणु परीक्षण कर लिया तो उसमें विश्व में इतनी प्रतिक्रिया की आवश्यकता क्यों है। हर राष्ट्र के पास अपनी क्षमता के अनुसार अणु बम है ऐसे में अगर कोई देश अपनी सुरक्षा की व्यवस्था करता है तो देश के राष्ट्र में बेचैनी क्यों?

भारत के प्रत्युत्तर में अणु परीक्षण की आवश्यकता को बताया गया जिसमें तर्क सहित कहा गया कि पास सभी देशों के समान अणु बम नहीं थे तथा अगर हम कुछ अणु बम बनाकर उनकी उनकी गिनती श्रेणी में आ जाते हैं तो उन देशों को ईर्ष्या क्यों होती है? अपनी सुरक्षा को मद्देनजर रखते हुए ही हमने यह अणु परीक्षण किया था। यह परीक्षण किसी हिंसा की भावना से नहीं किया गया है तथा न ही यह आक्रमण करने के लिए किया गया था। प्रधानमंत्री वाजपेयी जी ने कहा था कि हम पहले किसी पर आक्रमण नहीं करेंगे और नहीं आक्रमण की स्थिति उत्पन्न करेंगे यह परीक्षण शांति की ओर प्रेरित है तथा हिंसा हमें मंजूर नहीं है।

संदर्भ

1. Appadurai., Ramjan, M. S. “India”s Foreign Policy and Relations” South Asian Publishers. Pg. **68-72.**
2. Agrawal, R. C. “Foreign policy of India” Gwalior Kitab Ghar Publishers: Pg. **318.**
3. Fadia, B. L. “International Politics”. Sahitya Bhawan Publications: Pg. **70-96.**
4. Fadia, B. L. International Politics Sahitya Bhawan Publications. Pg. **411-412.**
5. Green Fred U.S. Policy and the Security of Asia Publisher M.C. Graw Hill Book Company: Pg. **303.**
6. Holsti, K. J. International Politics A Frame Work for Analysis Third Edition. Pg. **306-307, 352-355.**
7. Jain, R. K. Pakistan and Bangladesh. Vol-II. Pg. **26-28.**
8. Kumar, Mahendra. Theoretical Aspects of International Politics Shivalal Agarwala & Company Publications: Pg. **233-234.**
9. Kumar, Mahendra. Theoretical Aspects of International Politics Shivalal Agarwala & Company Publications: Pg. **297-299.**
10. Khanna, V. N. International Relations Vikas Publishing House: Pg. 234-240.
11. Narmer, D. Parmer. Scientific Book Agency Parkins Publications: Pg. 744-748.
12. Northag, F. S. Foreign Policy of main countries Publisher Deterence and Persuasian: Pg. **42-76.**
13. Organski. World Politics. Pg. **196.**
14. Pant, Pushpesh. International Relations Menakshi Prakashan: Meerut. Pg. **523-528.**

15. Ramcharit, Sujata. United Nations and world Politics. Pg. **160-165.**
16. Rosenau, N. James. International Politics and Foreign Policy. Pg. **171.**
17. Ramakant. Nepal, China & India. Abhinav Publications: Pg. **171-175.**
18. Sharma, Mathuralal. International Relations Gwalior Bazar Publications: Pg. **122-128.**
19. Sharma, Prabhudut. International Relations Tripolya Bazar Publications: Pg. **398.**
20. Singh, S. P. Political Dimensions of India U.S.S.R. Relations Allied Publishers: Pg. **67-69.**
21. Verma, Denanath. International Relations Gyanada Publications: Pg. **254-300.**

लेख

1. टाइम्स, नवभारत. (1998). परमाणु ऊर्जा के नए सीमांत 14 अगस्त. पृष्ठ **5.**
2. टाइम्स, नवभारत. (1998). सी. टी. बी. टी. 4. 8 जून. पृष्ठ **6.**
3. (1998). हिंदुस्तान अमेरिका की परमाणु नीति. 4 जुलाई. पृष्ठ **8.**
4. उजाला, अमर. (1998). जी– 8 ने भारत से. 17 मई. पृष्ठ 5.
5. उजाला, अमर. (1998). जी– 8 पर विश्व देशों. 25 मई. पृष्ठ **7.**
6. उजाला, अमर. (1998). सी. टी. बी. टी. पर भारत. 14 मई. पृष्ठ **6.**
7. उजाला, अमर. (1998). अमेरिका को सी. टी. बी. टी. 17 मई. पृष्ठ **5.**
8. उजाला, अमर. (1998). सी. टी. बी. टी. पर हस्ताक्षर. 28 जुलाई. पृष्ठ **8, 9.**
9. उजाला, अमर. (1998). सी. टी. बी. टी. पर हस्ताक्षर. 29 जुलाई. पृष्ठ **7.**
10. सहारा, राष्ट्रीय. (1998). सी. टी. बी. टी. पर हस्ताक्षर. 10 सितंबर. पृष्ठ **1.**
11. हिंदुस्तान– भारत. (1998). सी. टी. बी. टी. के मौजूदा. 17 सितंबर. पृष्ठ **1.**
12. सहारा, राष्ट्रीय. (1998). वर्तमान स्थितियों में क्या. 20 सितंबर. पृष्ठ **4.**
13. सहारा, राष्ट्रीय. (1998). भारत के दस्तखत नही. 21 सितंबर. पृष्ठ **9.**
14. सहारा, राष्ट्रीय. (1998). सी. टी. बी. टी. को अपनी. 21 सितंबर. पृष्ठ **10.**
15. सहारा, राष्ट्रीय. (1998). हस्ताक्षर करने या ना करने. 22 सितंबर. पृष्ठ **11.**
16. टाइम्स, नवभारत. (1998). भारत का पक्ष सुनना होगा. 25 सितंबर. पृष्ठ **8.**
17. उजाला, अमर. (1998). भारत के लिए पोखरण में एक. 11 मई. पृष्ठ **6.**
18. उजाला, अमर. (1998). धमकियो ––– दो और परमाणु. 13 मई. पृष्ठ **4.**
19. टुडे, इंडिया. (1998). परीक्षणों की मौजूदा श्रंखला पूरी. मई. पृष्ठ **33.**
20. उजाला, अमर. (1998). क्या गांधी के देश को बम नही. 26 मई. पृष्ठ **4.**
21. उजाला, अमर. (1998). परमाणु परीक्षणों को श्रेय लेने से. 20 मई. पृष्ठ **3.**
22. उजाला, अमर. (1998). नक्सलवादी समुहों ने परमाणु. 27 मई. पृष्ठ **4.**
23. उजाला, अमर. (1998). चाहते तो हम भी कर सकते थे. 20 मई. पृष्ठ **1.**
24. हिंदुस्तान. (1998). राष्ट्रीय लोकतांत्रिक मोर्चा. अगस्त. पृष्ठ **2.**

25. टाइम्स, नवभारत. (1998). अल्पसंख्यक भाजपा की नियत. 20 मई. पृष्ठ 3.
26. टाइम्स, नवभारत. (1998). परमाणु परीक्षणों के खिलाफ. 27 मई. पृष्ठ **1.**
27. उजाला, अमर. (1998). बुद्धिजीवियों ने परमाणु परीक्षण. 17 मई. पृष्ठ **5.**
28. कानिकल. (1998). अंतर्राष्ट्रीय. 18 दिसंबर. पृष्ठ **53.**
29. उजाला, अमर. (1998). जापान 15 मई. पृष्ठ **6,7.**
30. उजाला, अमर. (1998). एक बार फिर 25 मई. पृष्ठ **8.**
31. टुडे, इंडिया. (1998). भारत व पाकिस्तान. जुलाई. पृष्ठ **35.**
32. टाइम्स, नवभारत. (1998). बजट पूर्व आर्थिक. 29 मई. पृष्ठ **1,2.**
33. टाइम्स, नवभारत. (1998). ग्रुप– 8 की बैठक 29 मई. पृष्ठ **3.**
34. टाइम्स, नवभारत. (1998). काहिरा सम्मेलन. 15 मई. पृष्ठ **6.**
35. टाइम्स, नवभारत. (1998). अब पहल भारत करे. 1 जून. पृष्ठ **8.**
36. कानिकल. (1998). प्रमुख शक्तियो. 18 जून. पृष्ठ **18.**
37. टाइम्स, नवभारत. (1998). चुनौती का सामना 29 मई. पृष्ठ **1.**
38. उजाला, अमर. (1998). भारत ने सुरक्षा परिषद. 8 जून. पृष्ठ **1.**
39. उजाला, अमर. (1998). भारत के कूटनीतिक. 26 जुलाई. पृष्ठ **1.**
40. उजाला, अमर. (1998). भोट में बदलता. 6 जून. पृष्ठ **4.**
41. सहारा, राष्ट्रीय. (1998). नाभिकीय शस्त्रमुक्त 5 सितंबर. पृष्ठ **6.**
42. उजाला, अमर. (1998). भारत व रूस के बीच 5 जुलाई. पृष्ठ **3.**
43. उजाला, अमर. (1998). अमेरिका द्वारा लागू. 24 जुलाई. पृष्ठ **5.**
44. उजाला, अमर. (1998). प्रतिबंधो का आयुध. 31 जुलाई. पृष्ठ **2.**
45. उजाला, अमर. (1998). बजट में दिखेगा. 17 मई. पृष्ठ **7.**
46. टाइम्स, इकोनोमिक. (1998). अर्थशास्त्रियों के अनुसार. 13 मई. पृष्ठ **34.**
47. कनीकल. (1998). भारतीय प्रव्युत्तर. 18 मई. पृष्ठ **48.**